ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

हिन्दी में पक्ष (Aspect)

मुकेश चन्द

शोध छात्र, हिन्दी विभाग, महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय, भरतपुर (राज0) पता–सिरसौंदा रूपवास, पोस्ट ऑफिस व तहसील–रूपवास, जिला–भरतपुर (राज0) पिन कोड– 321404

ABSTRACT

पक्ष एक व्याकरणिक कोटि है। इसका सम्बंध क्रिया व्यापार की विभिन्न स्थितियों से है। ये स्थितियाँ पूर्ण, अपूर्ण, अस्तित्व आदि की सूचक होती हैं। परम्परावादी व्याकरण भाषिक काल के अन्तर्गत ही पक्ष का विश्लेषण करते रहे हैं। परन्तु आज पक्ष एक स्वतंत्र व्याकरणिक कोटिट के रूप में उभरकर आया है। पक्ष के सम्बंध में कुछ विद्वानों ने अपनी व्याकरण पुस्तकों अथवा शोध-पत्रों में विवेचन किया है। परन्तु वह सीमित रूप से है। अतः प्रस्तुत शोध आलेख में 'पक्ष' को एक नवीन, मौलिक एवं विस्तृत रूप से विवेचित करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

'पक्ष' शब्द अंग्रेजी के 'Aspect' (ऐस्पेक्ट) का हिन्दी रूपान्तरण है। पक्ष क्रिया विशयक कालबोध का ऐसा आयाम है जो क्रिया व्यापार में आंतरिक कालावधि से सम्बद्ध है। परम्परावादी व्याकरण भाषिक काल के अंतर्गत ही पक्ष का विशलेषण करते रहे हैं। हिन्दी में पक्ष के लिए कामताप्रसाद गुरू ने 'अवस्था' और केलॉग ने 'Aspect' शब्द का प्रयोग कर काल के अंतर्गत पक्ष को विश्लेषित किया है। परन्तु पक्ष को एक स्वतंत्र कोटि मानकर बर्नाड कॉमरी 'Comrie' ने 1976 में अपनी पुस्तक 'Aspect' में इसका विस्तार से समीक्षात्मक विवेचन प्रस्तुत किया। इसमें ऐतिहासिक परम्परा के साथ-साथ पक्ष के भाषा दार्शनिक आधार पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

काल से हटकर डॉ. आयेन्द्र शर्मा, डॉ. रवीन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. रमानाथ सहाय, डॉ. भोलानाथ तिवारी प्रभृति विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं और इसके भेद प्रस्तुत करने के प्रयास किए है। अतः इन्हीं विद्वानों के विचारों के आधार पर अब पक्ष को एक स्वतंत्र व्याकरणिक कोटि के रूप में मान्यता मिली है।

पक्ष का तात्पर्य **(Means of Aspect)**

'पक्ष' का शाब्दिक अर्थ है– रूप अथवा पहलू अर्थात् क्रिया व्यापार की विभिन्न स्थितियाँ। ये स्थितियाँ पूर्ण, अपूर्ण, अस्तित्व आदि की सूचक होती हैं। क्रिया कभी तो पूर्णता, कभी अपूर्णता, कभी नित्यता अथवा कभी सामान्यता को व्यक्त करती है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार– "क्रिया की उस क्षमता को पक्ष 'Aspect' कहते हैं, जिससे पूर्णता-अपूर्णता, नित्यता-सामान्यता आदि व्यक्त होती है।" ('हिन्दी भाषा', पृष्ठ-261) डॉ. रघुवंश मणि पाठक के मत से- "क्रिया के जिस रूप से व्यापार की विभिन्न स्थितियों, दशाओं या प्रक्रिया विशेषों का भान हो, उसे पक्ष 'Acspect' कहते हैं।" ('हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना', पृष्ठ-194)

वस्तुतः क्रिया की उस क्षमता को जिससे पूर्णता, अपूर्णता, नित्यता, सामान्यता इत्यादि विभिन्न स्थितियों का बोध हो, उसे 'पक्ष' कहते हैं। क्रिया के माध्यम से किसी व्यापार की सूक्ष्म से सूक्ष्म अवस्थाओं एवं कार्य संपादन के विभिन्न भावों को प्रदर्शित करने के लिए ही 'पक्ष' का प्रयोग होता है। इसी आधार पर हाकेट (Hockett) ने इसे 'क्रिया की परिरेखा या समोच्चरेखा' (Contour of action) कहा है।

पक्ष के भेद **(Kinds of Aspect)**

क्रिया के मूलतः दो रूप हैं– पूर्ण और अपूर्ण। इस दृष्टि से पक्ष के दो प्रमुख भेद हो जाते हैं– (1) पूर्णत्व (Perfective) द्योतक और (2) अपूर्णत्व (Imperfective) द्योतक। इनके अतिरिक्त पक्ष के कुछ अन्य भेद भी स्वीकार किए जाते हैं–

(1) पूर्णत्व द्योतक पक्ष **(Perfective Aspect)**– यह कार्य की पूर्णता को व्यक्त करता है। इसका चिह्न शून्य है, अर्थात् भूतकालिक कृदन्त में यह पक्ष मिलता है। जैसे–

राम दौड़ा। सीता दौड़ी। लड़के दौड़े।

उक्त उदाहरणों में आए 'आ', 'ई', 'ए' प्रत्ययों से पूर्ण पक्ष की अभिव्यक्ति होती है।
अन्य उदाहरण–

सरिता मैदान में दौड़ी।	मैंने पत्र पढ़ा।
सीमा खाना खा चुकी है।	तुमने राम को बुलाया है।

(2) अपूर्णता द्योतक पक्ष **(Imperfective Aspect)**– यह क्रिया की अपूर्णता को व्यक्त करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि कथन के क्षण में व्यापार तो प्रारम्भ हो गया है, किन्तु पूर्ण नहीं हुआ है। चूँकि अपूर्ण पक्ष में क्रिया-व्यापार की अनेक स्थितियाँ होती हैं, इसलिए इसके अनेक भेद हो सकते हैं–

(i) नित्यता बोधक पक्ष– 'नित्य' का अर्थ है– प्रतिदिन का, सतत्, जिसकी परम्परा न टूटे। यह प्रतिदिन कार्य करने या नित्यकर्म का बोध कराता है। इसका द्योतक 'त्' प्रत्यय है, अर्थात् वर्तमानकालिक कृदन्त में यह पक्ष रहता है। जैसे–

राम पढ़ता है। सूरज पूरब से निकलता है।

यह पक्ष स्वभाव, सामान्य नियम, ऐतिहासिक वर्तमान, पहले से अंत तक आने वाली घटना इत्यादि को भी व्यक्त करता है। जैसे–

मोहन झूठ बोलता है।	सीता चोरी करती है।
दो और दो चार होते हैं।	कौवा कला होता है।
	वह अनेक वर्षों से पढ़ता (पढ़ाता) था।
	इतने में देखते हैं कि सामने नंगी तलवार लिए वह खड़ा है।
	तुम्हारे बाप को आने दो, तो मैं तुम्हें मजा चखाता हूँ।

(iii) सातत्य बोधक पक्ष– इसे 'प्रगतिबोधक पक्ष' भी कहा गया है। यह कार्य के होने की निरंतरता का बोध कराता है। इसका द्योतक 'रह्' है। अर्थात् यह कथन के समय की बात को व्यक्त करता है। जैसे–

राम जा रहा है।	मोहन खा रहा है।
वह आ रहा है।	अभी तो वह काम कर रहा है।
इस समय वह नहा रहा है।	मोहन पढ़ रहा है।

टिप्पणी– यह 'रह्' मुख्य क्रिया (जैसे– राम घर में रहता है।) तथा रंजक सहायक क्रिया (जैसे– राम वहाँ रहता है।) से भिन्न है, जो मुख्य क्रिया के धातु-रूप के साथ ही आता है।

(iv) आरंभ बोधक पक्ष– कथन के क्षण में व्यापार के आरम्भ होने की सूचना उक्त पक्ष से होती है। इसका द्योतन 'ने' से होता है। अर्थात् क्रिया व्यापार के आरंभ होने की स्थिति का बोध इस पक्ष से होता है। जैसे–

मुझे नींद आने लगी।	मैं जैसे ही लिखने को हुआ।
गाड़ी जाने वाली है।	मैं वहाँ से चलने लगा।
घोड़े पर सवार होते ही वह सोचने लगा।	

(v) अभ्यास बोधक पक्ष– क्रिया व्यापार के बार-बार होने की स्थितियों को अभ्यास बोधक पक्ष के अंतर्गत विश्लेषित किया जाता है। हिन्दी में इसके लिए 'पौनपुन्य' शब्द भी प्रचलित है। इससे कथन के क्षण में बार-बार होने की सूचना मिलती है। जैसे–

वह मेरे घर आया करता है।	वह बैठा रहता है।
गोपाल पान खाता रहता है।	वह रात भर पढ़ता था।

(3) स्थिति बोधक पक्ष– इसका स्वरूप अन्य पक्षों से भिन्न है। इससे किसी भी स्थिति का बोध होता है। जैसे–

मोहन घर पर है।	वहाँ एक वृक्ष था।
मेरे घर के सामने एक वृक्ष है।	वह कुर्सी पर बैठा है।

टिप्पणी– इसके लिए दो क्रिया रूप उपलब्ध हैं– 'है' एवं 'था'। डॉ. एन. बी. राजगोपालन ने इसे 'कालानुवर्तनहीनता' नाम से अभिहित किया है।

(4) उत्परिवर्तन बोधक पक्ष– इस पक्ष से किसी अन्य व्यापार या साधन से प्रभावित होकर परिवर्तित होने का बोध होता है। यह एक प्रकार का कर्मवाच्य है। जैसे–

मेज बन गई।	चश्मे से दिखाई देता है।
चाकू से हाथ कट जाता है।	दीपक जलने से प्रकाश होता है।

विशेष– यहाँ ध्यातव्य है कि एक साथ दो पक्ष कभी नहीं आते। जैसे– 'वह आता रहा है।' में 'त्' पक्ष के रहते 'रह्' पक्ष नहीं माना जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. 'व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना', डॉ. हरदेव बाहरी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं-2002
2. 'वृहत व्याकरण भास्कर', डॉ. वचनदेव कुमार, भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना
3. 'हिन्दी: शब्द-अर्थ-प्रयोग', डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, सं-2009
4. 'प्रामाणिक सामान्य हिन्दी', डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, यूनीक पब्लिकेशन्स, दिल्ली
5. 'हिन्दी व्याकरण', कामताप्रसाद गुरू, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं-2010
6. 'शुद्ध हिन्दी कैसे सीखें', राजेन्द्र प्रसाद सिन्हा, भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना
7. 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना', डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, भारती भवन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, सं-2012
8. 'हिन्दी भाषा', डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाबाद, सं-1999
9. 'हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना', संपादक डॉ. भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली
10. 'हिन्दी क्रिया : काल, पक्ष एवं वृत्ति', संपादक चतुर्भुज सहाय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, प्रथम सं-1992
11. 'संस्कृत हिन्दी शब्दकोश', वामन शिवराम आप्टे, नीलकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
12. 'आदर्श हिन्दी शब्दकोश', मार्गव बुक डिपो, वाराणसी, सं-2001
13. 'हिन्दी शब्दकोश', डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली